

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम The Tribune
दिनांक 10.2.2020 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 6-8

Hisar varsity develops fodder oats variety

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, FEBRUARY 9

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University's fodder section in the Department of Genetics and Plant Breeding has developed a new fodder oats variety HFO 607.

It was identified (recognised) at the Varietal Identification Committee meeting at the National Group Meet (Rabi 2019-20) on the All-India Coordinated Research Project (AICRP) on Forage Crops and Utilisation held at Central Agricultural University, Imphal, recently.

Vice-Chancellor Prof KP Singh congratulated the team of scientists. He said that this variety of oats has been identified for cultivation in the northwest region mainly Haryana, Punjab,

HFO 607 identified for cultivation mainly in Haryana, Punjab, Rajasthan, Terai region, western Uttar Pradesh

Rajasthan, the Terai region of Uttarakhand and western Uttar Pradesh.

It is suitable for timely sown, irrigated under single cut system. This variety has been developed by a team of scientists comprising DS Phogat, Yogesh Jindal and Minakshi Jattan and the collaborators are Naveen Kumar, Dalvinder Pal Singh and Jayanti Tokas.

The university spokesperson said that the new variety is excellent in terms of production and nutrition. This variety of oats is suitable for timely harvesting in harvested



and irrigated areas.

HFO 607 gave 615.7 quintal per hectare (q/ha) green fodder yield which is 11.9 per cent and 17.4 per cent more than the national checks Kent (549.4 q/ha) and OS 6 (531.5 q/ha), respectively, he said.

He added that it showed superiority of 8.8 per cent for green fodder yield over the North West zone check OL 125 (565.3 q/ha).

It out-yielded (131.2 q/ha) the best national checks Kent (115.9 q/ha) by 12.98 per cent and OS 6 (106.7 q/ha) by 23.93 per cent for dry matter yield.

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम The Hindustan Times
दिनांक 8.2.2020 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 5-8

Locusts under control in Sirsa: Agri varsity

Bhaskar Mukherjee

bhaskar.mukherjee@hindustantimes.com

HISAR: A team of entomologist from Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), who had visited different villages in Sirsa after the arrival of swarms of locusts, on Friday said the situation was under control.

Sirsa deputy commissioner Ramesh Chander met with the officials concerned and directed them to report the presence of the locust swarms to the administration and scientists.

An alert was sounded in Phu-



■ A dead locust collected from an agriculture field in Sirsa.

HT PHOTO

lon, Chattha and Panniwala Morika villages in Sirsa after the arrival of locusts in Haryana. The agriculture department has formed emergency

response teams in Sirsa and Fatehabad.

CCSHAU assistant entomologist Anil Jakhar said, "Though the situation is under control but farmers must keep a strict vigil at all hours. Locust swarms travel during the day and eat all vegetation in their way."

"If a farmer sees 5,000 or more locusts over a hectare of agricultural land, they must inform the administration."

"There were 25 to 30 locusts per hectare in Sirsa. Locusts lay eggs in desert areas thus, farmers in Sirsa, Fatehabad, Bhilwani, Charkhi Dadri and

Mahendergarh must stay on alert," he added.

'THE NEW GENERATION OF FARMERS DID NOT KNOW ABOUT LOCUSTS'

Principal scientist and head of the department of entomology professor Yogesh Kumar said, "When we learnt of the presence of locust swarms, we sent a team to the affected area. The teams observed that old farmers were knowledgeable about locusts, but the new generation not so much. Therefore, awareness programmes are the need of the hour."

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम The Tribune
दिनांक 8.2.2020 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 7-8

'STATE-LEVEL WORK PLAN' WORKSHOP AT HAU

Hisar: A one-day workshop on 'State-level work plan - 2020 for Krishi Vigyan Kendras of Haryana and Delhi states' was held at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University here. Vice-Chancellor KP Singh was the chief guest on the occasion. The VC said, "About 86 per cent of the country's farmers are small and marginal. Of these, 65 per cent are below the age of 35 and are least interested in agriculture, which is a matter of concern. "According to a report of National Sample Survey Organisation, Ministry of Statistics, Government of India, during 2012-2013, an average farming family earned Rs 6,426 per month that increased to Rs 10,329 per month during 2018-19. In this way, we can increase the farmers' income by more than double by 2022," he said.

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम... अमर उजाला
दिनांक... 8.2.2020 पृष्ठ सं... 6 कॉलम... 3-5

‘औषधीय पौधों की खेती से पहले करें मार्केटिंग’

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के औषधीय, सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग, आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग की ओर से सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती पर करवाए प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुक्रवार को समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम सुपारी और मसाला विकास निदेशालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कालीकट, केरल की ओर से करवाया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक अनुसंधान डॉ. एसके सहरावत पहुंचे।

इस मौके पर डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती प्रदेश के शुष्क क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की खेती करने से पहले उनकी मार्केटिंग सुनिश्चित कर लेनी चाहिए ताकि बिक्री आसानी से की जा सके। औषधीय पौधों की खेती से संबंधित हर प्रकार



प्रतिभागी को सर्टिफिकेट देते मुख्यातिथि डॉ. एसके सहरावत। - अमर उजाला

■ हकूवि में सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती पर प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

की सलाह विश्वविद्यालय किसानों को उपलब्ध करता रहेगा। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 50 प्रतिभागियों ने भाग

लिया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन, डॉ. ऐ.के. छाबड़ा ने किया। इस अवसर पर डॉ. वीके मदान, डॉ. गजराज सिंह दहिया, डॉ. रवि कुमार, डॉ. झाबरमल, व डॉ. राजेश आर्य उपस्थित थे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम... दिनिक भास्कर
दिनांक... 8.2.2020 पृष्ठ सं... 3 कॉलम... 4-5

प्रशिक्षण शिविर के समापन पर लोगों को बांटे प्रमाण-पत्र



एचएयू में आयोजित कार्यशाला के बाद मुख्य अतिथि प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट देते हुए। साथ में हैं अन्य अधिकारी।

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में औषधीय सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। कार्यक्रम का आयोजन सुपारी और मसाला विकास निदेशालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कालिकट, केरल के सौजन्य से किया गया था। मुख्य अतिथि डॉ. एसके सहरावत ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि औषधीय पौधों की खेती हरियाणा

के शुष्क क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की खेती करने से पहले उनकी मार्केटिंग सुनिश्चित कर लेनी चाहिए, ताकि उनकी बिक्री आसानी से की जा सके और इससे अधिक लाभ कमाया जा सके।

औषधीय पौधों की खेती से संबंधित हर प्रकार की सलाह विश्वविद्यालय किसानों को उपलब्ध करता रहेगा। कार्यक्रम में हरियाणा के विभिन्न जिलों के 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन, डॉ. एके छाबड़ा ने किया। इस अवसर पर डॉ. वीके मदान, डॉ. गजराज सिंह दहिया, डॉ. रवि कुमार, डॉ. झाबरमल तथा डॉ. राजेश आर्य उपस्थित थे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दिनिक जागरण, हरियाणा
दिनांक 8.2.2020 पृष्ठ सं. 32, 14 कॉलम 1-2, 6-8

सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती प्रशिक्षण शिविर का समापन

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के औषधीय, सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग, अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सुपारी और मसाला विकास निदेशालय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय कालिकट केरल के सौजन्य से किया गया। मुख्य अतिथि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत रहे। डॉ. सहरावत

ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की खेती करने से पहले उनकी मार्केटिंग सुनिश्चित कर लेनी चाहिए ताकि उनकी बिक्री आसानी से की जा सके। इससे अधिक लाभ कमाया जा सकता है। औषधीय पौधों की खेती से संबंधित हर प्रकार की सलाह विश्वविद्यालय किसानों को उपलब्ध करता रहेगा। इस कार्यक्रम में हरियाणा के विभिन्न जिलों के 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। (जास)

हफूति में खेती प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

हिसार। हफूति के औषधीय, सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग, अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा सुगंध एवं औषधीय फसलों की खेती पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सुपारी और मसाला विकास निदेशालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कालिकट, केरल के सौजन्य से किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान, डॉ. एसके सहरावत थे। मुख्य अतिथि डॉ. एसके सहरावत ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि औषधीय पौधों की खेती हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की खेती करने से पहले उनकी मार्केटिंग सुनिश्चित कर लेनी चाहिए ताकि उनकी बिक्री आसानी से की जा सके और इससे अधिक लाभ कमाया जा सके। औषधीय पौधों की खेती से संबंधित हर प्रकार की सलाह विश्वविद्यालय किसानों को उपलब्ध करता रहेगा। इस कार्यक्रम में हरियाणा के विभिन्न जिलों के 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन, डॉ. ऐ.के. छाबड़ा ने किया।



लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....दिनिक भास्कर.....
दिनांक.....6.2.2020..... पृष्ठ सं.....2..... कॉलम.....2-5.....

रिसर्च • गर्मी और सर्दी में टेम्परेचर मेंटेन नहीं होने से मधुमक्खी पालने वाले किसानों को होता था घाटा छात्र ने मधुमक्खी पालन के लिए तापमान मेंटेन करने वाला बॉक्स बनाया

महबूब अली | हिसार

क्षेत्र के शाहपुर गांव के बी टेक प्रथम वर्ष के छात्र एवं युवा उद्यमी सात्विक ने परंपरागत मधुमक्खी पालन को सुगम, व्यवहारिक एवं सरल तकनीक से मधुमक्खी के नए किस्म के बॉक्स को बनाकर मधुमक्खी पालन की दिशा में एक नया आयाम स्थापित किया है। बॉक्स की खासियत है कि उसके अंदर मधुमक्खियों के लिए तापमान मेंटेन रहता है। मधुमक्खी बीमार भी नहीं होगी। हर माह बॉक्स को बेचकर सात्विक पचास से लेकर साठ हजार रुपये तक कमा रहा है। एचएयू के कुलपति डा. केपी सिंह ने भी सात्विक की सराहना करते हुए अन्य को भी प्रेरणा लेने की अपील की है।

मधुमक्खी की ऊर्जा तापमान को नियंत्रित करने के बजाय उत्पादन में लगेगा, मिलेगा बेहतर उत्पादन

सात्विक ने बताया कि बक्से में मधुमक्खी पालन करने में यह परेशानी सामने आती थी कि बक्से का तापमान मधुमक्खी के लिए अधिक या फिर कम हो जाता था। मधुमक्खी को सर्दी में 30 से 32 जबकि गर्मी में 25 डिग्री सेल्सियस तक तापमान बक्से के अंदर होना जरूरी होता है। मधुमक्खी की 30 प्रतिशत तक एनर्जी तापमान को मेंटेन करने में लगती थी मगर उसके द्वारा तैयार बक्खे में खुद ही तापमान गर्मी हो या फिर सर्दी मधुमक्खी के लिए स्थिर रहेगा। इसके लिए बॉक्स के अंदर पॉली यूरीथीन फाम लगाया गया है, जो इंसुलिन का काम करेगा।



यह होगा फायदा: तैयार किए गए एआईबी बॉक्स के अपनाने से मधु उत्पादन जहां बढ़ेगा। वहीं मधुमक्खियों में बीमारी कम होगी, मौन वंश की गुणवत्ता बढ़ेगी, क्वालिटी में भी सुधार होगा। एक बक्से में 15% तक अधिक उत्पादन किया जा सकेगा। इससे किसान की आमदनी भी बढ़ेगी।

एचएयू के एबीआईसी ने मांगे थे नए आइडिया

उसने पहले 10-10 बक्खों को 4 मधुमक्खी पालक किसानों को दिया था उसी के परिणामों से प्रोत्साहित होकर आइडिया को उधम के रूप में अपनाने का विचार आया। इसी दौरान एचएयू के एबीआईसी ने नए विचारों पर प्रस्ताव मांगे हुए थे। उसने भी आइडिया दिया। जिसे पास कर दिया गया। एचएयू के कारण ही वह बॉक्स बनाने में सफल हो सका है।

किसान ट्रेनिंग लेकर अपना बिजनेस कर सकते हैं

एचएयू में आइडिया को साझा कर ट्रेनिंग लेकर किसान खुद का बिजनेस खड़ा कर सकता है। सात्विक को भी दो माह की ट्रेनिंग दी गई थी। अन्य किसानों को भी ट्रेड किया जा रहा है।

-डॉ. केपी सिंह, कुलपति, एचएयू

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम... पाहल पक्ष
दिनांक... 9.2.2010 पृष्ठ सं... 2 कॉलम... 3-5

फसल अवशेष से धन अर्जित करने के लिए हकृवि ने बढ़ाया एक और कदम

हिसार, 7 फरवरी (निस) :- किसान समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बढ़ाने के साथ-साथ इसी फ्रेंडली वातावरण बनाए रखने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने फिनिश कंपनी फोर्टम के साथ एक लेटर ऑफ इंटर (एलओआई) पर हस्ताक्षर किए, जिसका एल्यूटी विश्वविद्यालय, फिनलैंड के साथ सहयोग है। एलओआई पर फिनिश कंपनी फोर्टम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और एल्यूटी विश्वविद्यालय, फिनलैंड के प्रतिनिधियों ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि यह परियोजना जीरो वेस्ट कॉन्सेप्ट पर केंद्रित है। इस एलओआई के माध्यम से, हम कृषि पर जलवायु और प्रदूषण के प्रभावों पर मौजूदा शोध



के सामंजस्य का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार हमारा ध्यान अवशेष-से-धन अर्जित करने की धारणा पर है, जो पर्यावरण-अनुकूल और व्यवहार्य उत्पादों को विकसित करके वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए फसल अवशेषों को कुशल, पर्यावरण के अनुकूल ऐसे उत्पाद जो बायोगैस, बायोएथेनॉल, फाइबर, लुगदी और कागज बनाने, जैव-तेल, बायोचार, पशु फीड, खाद, मशरूम उत्पादन, जैव सक्रिय यौगिकों, प्रिंकेटिंग पैलट्स, सक्रिय कार्बन बनाने में हमारी मदद कर सकता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य

फसल अवशेष जलाने से रोकना और पर्यावरण को बचाने के साथ-साथ मुदा स्वास्थ्य को बनाए रखना है। इस अवसर पर एल्यूटी विश्वविद्यालय, फिनलैंड के सुश्री अन्ना हैरी, फोर्टिस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के प्रमुख बायो2एक्स, श्री फैजुर रहमान, और बरिष्ठ, प्रधान प्रबंधक- बायो2एक्स, श्री सिद्धार्थ, एवं विश्वविद्यालय से प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर, डॉ. कमला मलिक, और प्रोजेक्ट के प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर्स, डॉ. वादयिका, डॉ. सुशील अहलायत, व डॉ. विनोद कुमार उपस्थित थे।